पाठ - 11
अल्लाह पर ईमान

الدرس الحادي عشر - هندي
أولا : الإيمان بالله

अल्लाह की उलूहियत, रबूबियत, उसके नाम और विशेषताओं में वहदानियत पर ईमान रखा जाए। अल्लाह पर ईमान में ये चीज़ें शामिल हैं:

क. इस बात पर ईमान लाया जाए कि अल्लाह ही माबूद है और सही अर्थों में इबादत का मुस्तहिक़ है। उसके सिवा कोई इन चीज़ों का मुस्तहिक़ नहीं है। इसका कारण यह है कि अल्लाह ही बन्दों का ख़ालिक़ (रचयता) है। वही उसके साथ एहसान का मामला करता है। उन्हें रोज़ी देता है। उसके खुले और छुपे भेदों को जानता है। वही नेक बन्दों को सवाब और गुनहगारों को सज़ा देने का सामर्थ्य रखता है।

इसकी वास्तविकता यह है कि इबादत की क़िस्मों में, जिन के ज़रिया अल्लाह की इबादत की जाती है, पूरे सम्मान और ख़ाकसारी के साथ उम्मीद लगाते हुए और डरते हुए केवल अल्लाह के लिए इबादत की जाए। इबादत करते समय अल्लाह के लिए मुहब्बत का जज़बा हो और उसकी महानता दिल में बैठी हो। कुरआन करीम में कई जगह इसका उल्लेख किया गया है। अल्लाह तआला फरमाता है: فَاعْبُدِ اللهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ﴿ أَلَا لِلهِ الدِّينُ الخَالِصُ

''अतः आप अल्लाह ही की इबादत करें, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। ख़बरदार! अल्लाह तआला ही के लिए ख़ालिस इबादत करना है (सूरह अल–जुम्र, आयत 2.3)

وَقَضَى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ यानी, ''अल्लाह ने फ़ैसला किया है कि सिर्फ़ उसी की इबादत करो (सूरह अलइसरा, आयत 23) और फरमाया فَادْعُوا اللهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الكَافِرُونَ ﴾

यानी, ''तुम अल्लाह को पुकारते रहो, उसके लिए दीन को ख़ालिस करके चाहे काफ़िर बुरा मानें (सूरह अलग़ाफ़िर, आयत 14)

ख. अल्लाह पर ईमान लाने में यह भी शामिल है कि उसने इस्लाम के जिन पांच ज़ाहिरी अरकान को अपने बन्दों के लिए वाजिब या फ़र्ज क़रार दिया है, उन सभी पर ईमान लाएं और इसके अलावा अन्य फर्जों पर ईमान रखना, जिन्हें शरीअत ने वाजिब क़रार दिया है।

ग. अल्लाह पर ईमान में यह भी शामिल है कि हम इस बात पर ईमान रखें कि अल्लाह तआला पूरी कायनात का खालिक़ और इंसानों के मामलात का वास्तविक मुदब्बिर है और अपने ज्ञान और सामर्थ्य के साथ जिस तरह चाहता है, अपने प्रयोग में लाता है।

उसी ने रसूलों को भेजा और लोगों की इस्लाह और ऐसी चीज़ों की तरफ दावत देने के लिए, जिनमें निजात और दीन व दुनिया की भलाई है, आसमानी किताबों को नाज़िल किया और उन चीज़ों में उसका कोई शरीक नहीं है अल्लाह फ़रमाता है: यानी, ''अल्लाह हर चीज को पैदा करने वाला है और वही हर चीज़ का रखवाला है। (सूरह अलज़ुम्र, आयत 62)

घ. अल्लाह पर ईमान में यह भी शामिल है कि हम कुरआन करीम में आयी हुई और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित अल्लाह के अस्माए हुस्ना (अच्छे नामों) और विशेषताओं पर बिना किसी हिचकिचाहट के ईमान लाएं जिनपर अल्लाह के नाम और उनकी विशेषता दलील के तौर पर पेश की जाती है। क्योंकि अल्लाह तआला की विशेषताओं का उनके शायाने शान संबोधित करें और उन गुणों में किसी को उसके समान न क़रार दें। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: यानी "और उसके समान कोई और चीज़ नहीं है और वह सुनने और देखने वाला है।(शूरा 11)